दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य
HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-HL6

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ratan Deep Gupta

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनाक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

प्रयास अच्छा है

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 133½

टिप्पणी (Remarks): सतत अध्ययन अपेक्षित

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) "सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।"

संदर्भ एवं प्रसंग :

प्रस्तुत दोहा भक्तिकाल के निर्गुणधारा शाखा के प्रमुख हस्ताक्षर 'कबीर' द्वारा लिखित है, इसका संकलन श्याम सुन्दर दास द्वारा 'गुरु को अंग' के अन्तर्गत किया गया है।

कबीर द्वारा अपने गुरु की कृपा को अपने अन्दर सद्ज्ञान एवं आत्मप्रकाश के प्रस्फुटन के कारण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या : -

कबीर दास जी कहते हैं कि सद्गुरु ने मेरे शरीर को कमान बनाकर प्रेम रूपी तीर चला रहे हैं। एक तीर मुझे भी लगा है और मेरे भीतर का समस्त अहंकार समाप्त हो गया है।

प्रेम एवं ज्ञानरूपी रस से मेरा रोम-रोम बिंध गया है। मेरे अन्दर अब लेशमात्र भी अज्ञान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नहीं रह गया है।

विशेष :-

(1) कबीर दास जी की गुरु भक्ति एवं ज्ञान से प्रकाशमय होने की अवधारणा व्यक्त की गई है।

(2) कबीर दास जी ने अन्यत्र भी लिखा है -

'गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागूं पाय
बलिहारी गुरु आपणो, जिन गोविन्द दियो मिलाय।"

(3) भाषा सधुक्कड़ी प्रकृति की है।

(4) अनुप्रास एवं अलंकार देखा जा सकता है।

(5) प्रासंगिकता :-

आज के वर्तमान युग में, जब गुरु के नाम पर भक्तों को उल्लू बनाया जा रहा है। उदाहरणस्वरूप - संत राम रहीम, आसाराम इत्यादि। ऐसे में सच्चे गुरु की आवश्यकता जो जीवन को वास्तविक प्रकाश दे सके, अत्यधिक प्रासंगिक हो जाती है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब ते बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन विधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यावतरण भक्तिकाल की सगुणधारा के कृष्णप्रेमी कवि सूरदास जी द्वारा रचित एवं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत है।

प्रस्तुत पद्यांश में राधा एवं गोपियों के संवाद के माध्यम से सूरदास चन्द्रमा के गतिहीन होने एवं राधा की विरह की दशा का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या :-

राधा गोपियों से कहती है कि वीणा की प्रवाहित होती ध्वनि से चन्द्रमा के रथ के मृग आगे नहीं बढ़ रहे हैं। इससे चन्द्रमा आगे नहीं बढ़ पा रहा है और रात्रि भी नहीं ढल रही है।

राधा अपनी विरह दशा को व्यक्त करते हुए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहती है कि जब से श्रीकृष्ण मथुरा गये है, उनके आँसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। यह शीतल चन्द्रमा भी अग्नि के समान जल रहा है। बिना प्यारे कमलनयन को निहारे सभी जतन व्यर्थ हो रहे हैं।

विशेष :-

1. राधा के विरहवर्णन का अत्यन्त मार्मिक वर्णन सूरदास के द्वारा किया गया है।
2. वीणा की ध्वनि से चन्द्रमा के रथ के मृगों का रुकना सूरदास की कल्पनाशीलता को नये आयाम देता है। बिम्ब निर्माण भी दृष्टव्य है।
3. भाषा माधुर्ययुक्त ब्रजभाषा है।
4. उपमा एवं रूपक अलंकार का सुंदर प्रयोग दृष्टव्य है।
5. सूर के विरह वर्णन की भाँति जायसी ने भी पदमावत में नागमती के विरह को इस प्रकार दिखाया है

"यह तन जारौ छार कै कहौ कि पवन उड़ावु
मकु तेहि मारग उड़ि परै कंत धरै जहाँ पाव।"

Give 6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पद्यांश प्रगतिवादी विचारधारा के मूर्धन्य कवि एवं जनकवि 'नागार्जुन' द्वारा रचित लम्बी कविता "बादल को घिरते देखा है" से उद्धृत है।

नागार्जुन प्रकृति के उस रूप का वर्णन कर रहे हैं जो उन्होंने हिमालय पर स्वयं देखा है। वे प्रचलित मान्यताओं का खण्डन भी कर रहे हैं।

व्याख्या :-

प्रकृति के आँखो देखी वर्णन करते हुए नागार्जुन कहते हैं कि उन्हें कैलाश पर प्रचलित मान्यताओं के अनुसार न तो कुबेर मिला, न ही उसकी अलकापुरी नगरी। वे कालिदास के वर्णनों को भी नहीं पा सके हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः नागार्जुन कहते हैं कि ये सब प्रचलित मान्यताएँ कवि की कल्पनाएँ थी।

वे अपनी बात को सिद्ध करते हुए कहते हैं कि उन्होंने घोर जाड़ों में कैलाश पर बादलों एवं झंझावतों को आपस में भिड़ते हुए देखा है।

विशेष :-

(1) नागार्जुन की प्रचलित मान्यताओं पर कुठाराघात एवं सत्य की अन्वेषण की प्रवृत्ति झलकती है।

(2) कुछ विद्वानों ने इस कविता पर मार्क्सवादी संकेतों यथा बादलों पर क्रांति के बादलों का आरोपण किया है, परन्तु नागार्जुन मार्क्सवादी विचार धारा के समर्थक नहीं है यद्यपि वे मार्क्सवादी रहे है।

(3) भाषा तत्सम एवं तद्भव का अनूठा मिश्रण है।

(4) विराट बिम्बों की अनुपम प्रस्तुति है।

(5) 'बादल को घिरते देखा है' से तुक एवं काव्य में आंतरिक लय विद्यमान है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मुझे स्मरण है:
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझ को।
सुनता हूँ मैं
पर हर स्वर-कम्पन लेता है मुझ को मुझ से सोख-
वायु-सा नाद-भरा मैं उड़ जाता हूँ।...

संदर्भ एवं प्रसंग :

प्रस्तुत काव्यावतरण प्रयोगवाद एवं नई कविता आन्दोलनों के प्रस्तावक कवि अज्ञेय द्वारा रचित एवं उनके संकलन 'आँगन के पार द्वार' से उद्धृत है। 'असाध्यवीणा'

प्रस्तुत अंश में प्रियंवद द्वारा स्वयं के अस्तित्व को किरीटी तरु के माध्यम से महाशून्य में विलीन कर देने की चर्चा की गई है।

व्याख्या :-

वीणा के तारों को ध्वनि देने के क्रम में प्रियंवद स्वयं का शोधन करते हुए स्वयं उस महामौन एवं महाशून्य में विस्मृत हो गया है।

उसका अहंकार और 'मैं' उस महातत्व में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विलीन हो गया है। इस कारण वह स्वयं को बहुत ही हल्का महसूस कर रहा है।

विशेष :-

(1) अस्तित्व के विलीनीकरण एवं अहंकारशून्य होकर स्वयं को उस महामौन का हिस्सा मानने की प्रवृत्ति भारतीय वेदान्तों के अहं ब्रह्मास्मि में भी प्रकट हुई है। जैन बौद्धिज्म का प्रभाव स्पष्ट है

(2) यद्यपि दिनकर जैसे आधुनिक कवि ने मनुष्य चेतना को प्रबलता प्रदान कर उपरोक्त विचार धारा का विरोध किया है

"ब्रह्म का लिखा भाग्य में मनुज कुछ नहीं लाया है
उसने अपना भाग्य अपने भुजबल से ही पाया है।"

(3) अज्ञेय शब्दों के शिल्पी हैं। भाषा का प्रत्येक शब्द अपनी अर्थवत्ता रखता है।

(4) बिम्ब भूषण अज्ञेय यहाँ भी प्रशंसनीय रूप से उपस्थित है।

(5) प्रासंगिकता - आज के भौतिकवादी युग में अहंकार विलीनता की विचारधारा मनुष्य के आधुनिक जीवनशैली के कष्टहरण का उपाय हो सकती है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पिस गया वह भीतरी
और बाहरी दो कठिन पाटों बीच,
ऐसी ट्रैजेडी है नीच!!
बावड़ी में वह स्वयं
पागल प्रतीकों में निरंतर कह रहा
वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
और मर गया...

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यांश प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद के सशक्त हस्ताक्षर मुक्तिबोध द्वारा रचित लम्बी कविता 'ब्रह्मराक्षस' से उद्धृत है।

मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों के जीवन का आत्मसंघर्ष इस कविता में प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

व्याख्या :-

ब्रह्मराक्षस इस भाव से ग्रसित है कि वह आत्मचेतस एवं विश्वचेतस होने की दुविधा के बीच अपना कर्तव्य पूर्ण निष्ठा से नहीं निभा सका।

वह इसी अधेड़बुन में अपनी कोठरी में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ही श्वेत रहा अर्थात पूर्णरूप से विश्वचेतस बनकर समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को निभा न सका।

विशेष :-

1. ~~अज्ञेय~~ मुक्तिबोध ने आत्मचेतस एवं विश्वचेतस के द्वन्द को प्रतीकों के माध्यम से उभारा है।

2. फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव है, परन्तु लिबिडो का विचार ~~अज्ञेय~~ मुक्तिबोध ने नहीं लिया है।

3. भाषा - ~~अज्ञेय~~ मुक्तिबोध की भाषा को निर्मला जैन ने "अनगढ़ तेजोदीप्त" कहा है - यहाँ भी दृष्टव्य है।

4. फैंटेसी शिल्प का सुंदर प्रयोग यथार्थ को दिखाने के लिए प्रयुक्त हुआ है।

5. प्रासंगिकता :-

आज का मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी भी इसी उलझन में है उसे इस काव्य से प्रेरणा मिलेगी।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' की काव्यभाषा का अनुशीलन करते हुए उसकी विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्यवीणा' अज्ञेय की रचनाशीलता की उत्कृष्टता को प्रकट करने वाली रचनाओं में शामिल की जाती है। इस लम्बी कविता में अज्ञेय ने अनेक भाषागत प्रयोग किये है।

अज्ञेय शब्दों के शिल्पी रहे है, उनके अनुसार 'शब्द ही काव्य है'। असाध्यवीणा में भी यह विशेषता उभरकर आयी है। कविता का एक-एक शब्द अपनी अर्थवत्ता एवं स्थान में इतना महत्वपूर्ण है कि उसको वहाँ से हटाना मुश्किल है।
एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

मुझे स्मरण है:
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझको.

अज्ञेय एक कुशल बिम्ब सृष्टा भी हैं। असाध्य वीणा में भी बिम्बों की श्रृंखला के दर्शन होते हैं। वे बिम्बों के माध्यम से ही किरीटी तरु

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एवं प्रियंवद में पिता-पुत्र तो वही वीणा एवं प्रियंवद में माता-पुत्र के सम्बन्धों का सृजन कर देते हैं। एक उदाहरण -

"अलस अंगड़ाई लेकर जाग उठी थी वीणा
किलक उठे थे स्वर शिशु।"

अज्ञेय ने अपनी काव्य भाषा में प्रतीकों का भी सुंदर प्रयोग किया है। तत्सम एवं तद्भव का अद्भुत मिश्रण भी अज्ञेय के असाध्यवीणा की विशेषता रही है। यद्यपि प्रायः अज्ञेय के पद्य तद्भवयुक्त जब गद्य तत्सम बहुला रहे हैं। तद्भवयुक्त भाषा का एक उदाहरण -

'तू उतर वीणा के तारों में
अपने से गा, अपने को गा।''

असाध्यवीणा में जब बौद्धमत से प्रभावित अज्ञेय ने अपनी दार्शनिकता को ऐसा घुलाया है कि वह भाषा पर बोझ नहीं बनी है। टी. एस.

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इलियट के निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त जिसमें कि 'भोगने वाले मन' को रचना करने वाले मन' से अलग रखने की प्रबलता है, का भी प्रभाव अज्ञेय ने अपनी काव्यभाषा में असाध्यवीणा के माध्यम से बखूबी उतारा है।

यद्यपि छायावाद के बाद कविता 'पाठ्य वस्तु हो गई थी एवं आर्ट आफ रीडिंग का प्रभाव भी असाध्यवीणा की भाषा पर देखा जा सकता है।

जहाँ तक लय एवं तुक की बात है तो नई कविताओं की भाँति इसमें भी प्रायः यह निर्बल है, परन्तु आंतरिक लय सर्वत्र विद्यमान है एक उदाहरण -

"देखा आपने जो कुछ
वह मेरा नहीं
न ही वीणा का था।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार शब्दों के कुशल चितेरे अज्ञेय ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय असाध्यवीणा की काव्यभाषा में दिया है।

बहुत अच्छा

11½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? विश्लेषण कीजिए। 15

ब्रह्मराक्षस कविता मुक्तिबोध की फैंटेसी शिल्प पर आधारित प्रसिद्ध कविता है। इस कविता में मुक्तिबोध स्वयं ब्रह्मराक्षस का सजल उर शिष्य बनना चाहते हैं। वे लिखते हैं-

"मैं ब्रह्म राक्षस का सजल उर शिष्य होना चाहता
जिससे कि उसका वह अधूरा कार्य
उसकी वेदना का स्रोत
संगत पूर्ण निष्कर्षों तलक
पहुँचा सकूँ।"

स्पष्ट है कि ब्रह्मराक्षस अपने जीवन में अपने कर्तव्यों का समाज के प्रति पालन न कर पाने का दोषी स्वयं को मानता है। वह आत्मचेतस एवं विश्वचेतस की मध्यम वर्गीय बुद्धिजीवी के द्वन्द से बाहर नहीं निकल सका है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कवि कहता है कि -

~~वह किस तरह~~
" वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
औ' मर गया ।"

इसलिए कवि ब्रह्मराक्षस का शिष्य बनकर उसे समझाना चाहता है कि पूर्णतः विश्वचेतस बनना संभव नहीं है। ब्रह्मराक्षस की असफलताएँ वस्तुतः 'भव्य असफलताएँ' हैं। विश्वचेतस बनने में परालवांश का अन्तर रहना पूर्णतः स्वीकार्य है।

सजल-उर-शिष्य अर्थात भावनाओं से युक्त हृदय वाले शिष्य के माध्यम से कवि ब्रह्मराक्षस को उसके संत्रास एवं आत्माधिकार से मुक्ति प्रदान कर उसके प्रयासों की सार्थकता को प्रमाणित करना चाहता है।

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'हरिजन गाथा' कविता की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता का निर्धारण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'हरिजन गाथा' नागार्जुन की विचारधारा को प्रक्षेपित कर उनके जनकवि होने की सार्थकता को सिद्ध करती हुई कविता है।

नागार्जुन मार्क्सवादी कवि हैं एवं इस कविता की अर्न्तवस्तु पर बिहार के बेलछी काण्ड में दलितों पर हुए अमानुषिक अत्याचार एवं मार्क्सवादी क्रांति चेतना की अभिव्यक्ति की गई है।

दलितों पर हुए कारुणिक एवं दिल दहला देने वाले कुकृत्य को स्पष्ट करते हुए कवि कहता है-

"ऐसा तो कभी न हुआ था
कि तरह के तरह अभागे
अकिंचित मनुष्य
शोक दिये गये हो
अग्नि की विराट लहरों में"

नागार्जुन इस जातिगत घृणा से अत्यन्त दुःखी हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वे सवर्ण जातियों के अत्याचार का प्रतिकार कृष्ण के अवतार रूपी भिथक तथा जनक्रांति के रूप में देखते हैं।

वे स्पष्ट करते हैं कि यह 'अद्भुत शिशु' ही 'सबका उद्धार करेगा'। आगे नागार्जुन मार्क्सवाद की सशस्त्र क्रांति को समाधान के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहते हैं-

"धन बल जन बल सभी जुटेगा
हथियारों की कमी न होगी।"

'हरिजन गाथा' का मूल स्वर तो आज भी प्रासंगिक है। हरिजनों पर होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए सरकार ने एस.सी/एस.टी एक्ट (संशोधन) कानून 2015 के माध्यम से प्रावधानों को अधिक कड़ा कर दिया है।

यद्यपि मार्क्सवादी क्रांति की अवधारणा वर्तमान के सभ्य समाज एवं लोकतांत्रिक व्यवस्था में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अपने मूल रूप में प्रासंगिक नहीं दिखती है। हाँ, यह अवश्य है कि हाल ही में पश्चिमी उत्तर प्रदेश, गुजरात इत्यादि स्थानों पर दलितों का एकजुट होकर अत्याचारों के विरोध के रूप में उसी क्रांति की अनुगूँज सुनाई पड़ती है।

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 20

नागार्जुन जन कवि है। उनकी कविताएँ जनसाधारण की भावनाओं, उनकी समस्याओं को प्रेषित करती हुई दिखती है।

नागार्जुन की जनभावना केवल मानव ही नहीं मानवेत्तर दुःखों को भी देखती है, जिसे आचार्य शुक्ल ने 'कविता क्या है' में एक प्रमुख काव्य गुण बताया है। एक उदाहरण।—

"बहुत दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास
बहुत दिनों तक कानी कुतिया सोयी उनके पास"

नागार्जुन की कविता सुंदर की उपासना के स्थान पर साधारण एवं भदेस को प्राथमिकता देती है। उनके काव्य में 'भुट्टे' की सुंदरता, ग्रामीण कृषकों की साधारण जीवन शैली के सहज दर्शन होते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन प्रतिबद्ध मार्क्सवादी हैं, परन्तु वे यांत्रिक विचार धारा का जनता के पक्ष में विरोध करते दिखते हैं। एक उदा-

"क्या है दक्षिण, क्या है वाम
जनता को रोटी से काम।"

जब वे बड़े नेताओं को अपनी नाव पर बाढ़ इत्यादि का जायजा लेते देखते हैं, तो वे क्रोध एवं व्यंग्य से भरकर कहते हैं

"गिरिजन, हरिजन भूखो मरते, हम डोले वन-वन में
तुम रेशम की साड़ी डाटे, उड़ती फिरो गगन में।"

इसी प्रकार नागार्जुन की भाषा एवं शैली भी आमजन के करीब है। फिर चाहे वह अकाल और उसके बाद हो या फिर हरिजन गाथा।

अके पात्रों के नाम हरिजन गाथा में यथा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बुद्ध, खेदन ग्रामीण एवं साधारण पृष्ठभूमि की सहज ही याद दिला देते हैं। उनकी जनसामान्य भाषा का एक उदाहरण-

देखो तो कैसा मुलुर-मुलुर देख रहा शैतान

इसी प्रकार जनसामान्य से जुड़े हुए देशज मुहावरों का प्रयोग भी उनके इसी विशिष्ट उदात्त की अपेक्षा तथा साधारण के प्रति प्रतिबद्धता को व्यक्त करता है। एक उदाहरण-

"राम जी के आसरे जी गया अगर
कौन सा ढेला तोड़ेगा, कौन सी आटी फोड़ेगा।"

इस प्रकार नागार्जुन अपने काव्यकर्म में साधारण जीवन के प्रतिबद्ध साहित्यकार बन कर उभरे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' में प्रयुक्त फैंटेसी शिल्प के स्वरूप एवं औचित्य पर प्रकाश डालिये। 15

ब्रह्मराक्षस में मुक्तिबोध ने फैंटेसी शिल्प का प्रयोग किया है।

स्वरूप :-

=> फैंटेसी शिल्प का प्रयोग अवचेतन/अचेतन मन की भावनाओं को यथार्थ में प्रस्तुत करने के लिए होता है।

=> यहाँ मुक्तिबोध ने यथार्थ की प्रतीकात्मक प्रस्तुति की है।

उदा —

" पिस गया वह भीतरी
औ' बाहरी दो कठिन पाटों के बीच
ऐसी ट्रैजेडी है नीच।।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

औचित्य :-

=> यथार्थ को प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करने का माध्यम बनाया है।

=> आवश्यक नहीं कि यथार्थ की प्रस्तुति यथार्थ के माध्यम से ही हो

=> डा. राम विलास शर्मा ने इसकी आलोचना भी की है।

यद्यपि अज्ञेय का मानना है कि फैंटेसी शिल्प के प्रयोग से वे यथार्थ के सम्पूर्ण विवरण से बचकर मूल अंश को प्रकट कर सके हैं।

प्रयास किये हैं
और बेहतर नमूना
मॉडल उत्तर देखें

7/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जैन बौद्धमत के प्रभाव के संदर्भ में 'असाध्य वीणा' कविता का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

असाध्यवीणा पर जैन बौद्धमत का प्रभाव है।

जैन बौद्धमत :-

=) यह बौद्धधर्म की माध्यमिक शून्यवाद से प्रभावित शाखा है।

=) इसमें पर विशेष बल एवं शून्य वाद में विश्वास रखता है।

=) व्यक्तित्व विलीनीकरण तथा सब कुछ व्यक्ति के अन्दर मानता है।

असाध्यवीणा पर प्रभाव

=) असाध्यवीणा में सृजनात्मक रहस्यवाद के रूप में इसका प्रभाव है।

=) प्रेयवद वीणा को इसलिए साध्य

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पाया क्योंकि उसने स्वयं को वीणा को सौंप दिया था।

"प्रियंवद साध रहा था वीणा
नहीं स्वयं को शोध रहा था"

=> प्रियंवद स्वयं स्वीकार करता है कि उसका व्यक्तित्व विलीन हो गया है।

"वायु सा नाद भरा मैं उड़ा जाता हूँ..."

इस प्रकार असाध्यवीणा पर जेन बौद्धमत का व्यापक प्रभाव है।

प्रयास ठीक है
और गहराई लाएं
मॉडल उत्तर देखें

7/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यावतरण प्रसिद्ध प्रगतिवादी उपन्यासकार यशपाल द्वारा लिखित उपन्यास 'दिव्या' से उद्धृत है।

यहाँ चार्वाकी विचारधारा से प्रभावित मारिश दिव्या से अंशुमाला बन चुकी नर्तकी को जीवन के प्रवाह के विषय में बता रहा है।

व्याख्या :-

मारिश जीवन को एक प्रवाह की भाँति बताता है। वह दिव्या को जीवन को सजीवता से जीने की प्रेरणा देते हुए कहता है कि अच्छा एवं बुरा दोनों ही समय का प्रवाह है।

वह आगे इसी प्रवाह को सृष्टि एवं प्रकृति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की शाश्वता का आधार बनता है।

विशेष :-

(1) यशपाल की जीवन की सततता एवं सजीवता से जीने की पंक्तियाँ प्रेरणादायक है।

(2) अज्ञेय ने भी अपने निबंध संवत्सर में कालचक्र की अवधारणा के माध्यम से जीवन की सत्यता को स्थापित किया है।

(3) भाषा प्रायः तत्सम प्रधान है।

(4) विराम चिन्हों का कुशल प्रयोग एवं संवाद शैली द्रष्टव्य है।

(5) प्रासंगिकता :-

आज जब मानसिक तनावों के चलते आत्महत्याओं की संख्या बढ़ रही है ऐसे में ये पंक्तियाँ प्रेरणा का कार्य करती है।

Good 6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में संख्या के अतिरिक्त न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश युगपरिवर्तक निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की काव्यशास्त्रीय निबंध 'कविता क्या है' से उद्धृत है।

कविता के विभिन्न आयामों की व्याख्या करते हुए आचार्य शुक्ल इन पंक्तियों को उद्धृत करते हैं।

व्याख्या :-

कविता के आयामों की व्याख्या करते हुए आचार्य शुक्ल कहते हैं कि कविता एवं मनुष्यता के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है।

कविता मनुष्य को भावयोग तक ले जाती है। ऐसा मनुष्य जगत के साथ पूर्णतः एकाकार की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थिति में आ जाता है। उसका अहंकार एवं 'मैं' तत्व विलीन हो जाता है एवं वह सम्पूर्ण विश्व का हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

(1) यहाँ कक्षा की व्याख्या के माध्यम से तत्व वेदांत की धारणा का प्रतिक्षेपण किया गया है।

(2) शुक्लजी की भाषा तत्सम प्रधान है।

(3) विचारों की गूढ़ गुम्फित परम्परा एवं निगमनात्मक शैली दृष्टव्य है।

(4) वैज्ञानिकता एवं विचारशीलता शुक्ल जी के निबन्धों की विशेषता ही है - यहाँ भी दृष्टव्य है।

(5) प्रासंगिकता :-

आज के भावहीन, भौतिकवादी, तकनीक प्रधान, मशीनी युग में कविता की महत्ता ये पंक्तियाँ स्थापित करती हैं।

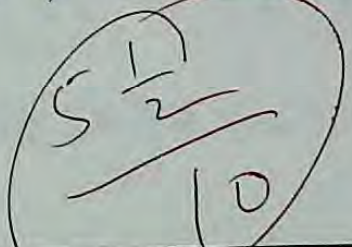

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कर्त्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिये बार-बार कर्त्ता ही की ओर आँख उठती है। कर्मों से कर्त्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्त्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान
संख्या के अतिरि
न लिखें।
(Please do no
anything exc
question num
this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी के सुविख्यात निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित प्रसिद्ध मनोविकार पर आधारित निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' से उद्धृत है।

प्रस्तुत पंक्तियों में शुक्ल जी श्रद्धा की व्याख्या के अन्तर्गत कर्ता की प्रवृत्तियों को स्पष्ट कर रहे हैं।

व्याख्या :-

शुक्ल जी कहते हैं कि कर्ता द्वारा कर्म किये जाने से उसे संतोष प्राप्त होता है। यही तथ्य उसे सुंदरता प्रदान करता है एवं उसे लोगों की श्रद्धा का पात्र भी बनाता है।

कर्ता द्वारा कर्म की प्रेरणा से अन्य मनुष्य भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कर्तव्य करने को प्रवृत्त होते हैं। इस प्रकार कर्म एक विस्तृत क्षेत्र में लोगों को प्रभावित करता है।

विशेष:-

(1) कर्म की महत्ता को श्रद्धा के केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया है।

(2) गीता में भी कर्मण्येवाधिकारस्ते के माध्यम से इसी तथ्य को स्थापित किया गया है।

(3) सुकरात जैसे दार्शनिक भी "काम प्यारा है चाम नहीं" (हैण्डसम सी डैट हैण्डसम डज) को स्थापित करते हैं।

(4) भाषा प्राय: तत्सम प्रधान है।

(5) वैज्ञानिक शैली एवं विचारों की गूढ़ गुम्फित परम्परा के दर्शन होते हैं।

(6) तुलसीदास जी ने भी लिखा है-

"कर्म प्रधान विश्व रचि राखा
जो जस कीन्ह तासि फल चाखा।"

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भारत समग्र विश्व का है, और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय—भारत—किस मूर्ख को प्यारा नहीं है?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश छायावाद के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में धातुसेन एक प्रश्न के उत्तर में अपने भारत के प्रेम के कारणों को पंक्तिबद्ध कर रहा है।

व्याख्या :-

भारत की प्रशंसा करते हुए धातुसेन कहता है कि भारत तो वस्तुतः सम्पूर्ण संसार का है। यह तो प्राचीन काल से ही ज्ञान, मानवता, सभ्यता का केन्द्र रहा है।

भारत सर्वत्र प्रशंसनीय रहा है। सम्पूर्ण विश्व को इसने अपने प्रेम की डोरी से बांधा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

(1) प्रसाद द्वारा एक विदेशी से भारत की प्रशंसा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के आदर्शों को पुनर्जीवित करने का प्रयास प्रशंसनीय है।

(2) प्रसाद की इतिहास के प्रति मोह एवं रोमानी दृष्टि व्यक्त हुई है।

(3) नवजागरणकालीन परिवेश का प्रभाव द्रष्टव्य है।

(4) भाषा प्रायः तत्सम प्रधान है, विराम चिह्नों का सुंदर प्रयोग द्रष्टव्य है।

(5) मैथिलीशरण गुप्त ने भी लिखा है -

"सभी देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन भारतवर्ष है।"

अच्छा

6/10

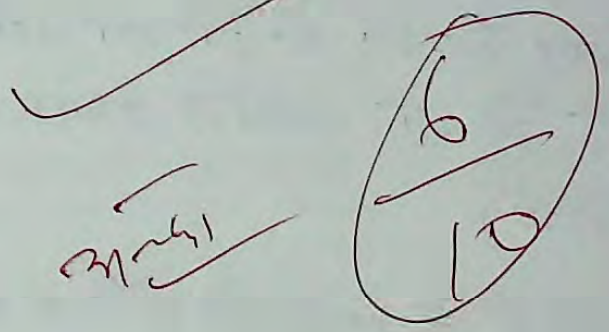

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) सामन्ती बन्धनों के खत्म होने पर सौन्दर्य और प्रेम की भावनाएँ अपने सहज रूप मे पल्लवित होंगी और नारी कवियों की नायिका मात्र न रह जाएगी। वह श्रम करने वाली, समान अधिकार वाली नागरिक भी होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध मार्क्सवादी आलोचक डॉ॰ रामविलास शर्मा द्वारा लिखित निबंध 'तुलसी साहित्य के सामन्तविरोधी मूल्य' से ली गई हैं।

तुलसी दास जी द्वारा नारी के प्रश्न पर अपने विचारों को व्यक्त करते हुए शर्मा जी ने उपरोक्त पंक्तियाँ कही हैं।

व्याख्या :-

शर्मा जी अपने विचारों को प्रकट करते हुए नारी को मात्र सौन्दर्य की देवी एवं नायिका न मानकर उसे एक सम्मानित नागरिक की भाँति देखते हैं।

वे मानते हैं कि सामन्तवादी मूल्यों के कारण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ही नारी को केवल सौन्दर्य एवं प्रेम तक सीमित कर दिया गया है। इस बन्धनों के टूटते ही नारी भी पुरुष के समान स्वतन्त्र नागरिक होगी।

विशेष :-

(1) शर्मा जी के मार्क्सवादी मूल्यों का प्रक्षेपण 'समान अधिकार वाली नागरिक' के रूप में प्रशंसनीय है।

(2) तुलसीदास के नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

(3) भाषा तत्सम एवं तद्भव का मिश्रण है।

(4) प्रासंगिकता :-

आई. एम. एफ. की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक यदि महिलाओं को कार्य में भागीदारी बढ़ाई जाये तो भारत की जी.डी.पी. में तेजी से वृद्धि होगी।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) "पांडित्य और लालित्य का विलक्षण सयोग आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध-कला की अन्यतम विशेषता है।" इस कथन के संदर्भ में 'कुहज' निबंध का विवेचन कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कुटज' हजारी प्रसाद द्विवेदी का प्रमुख ललित निबंध है।

विशेषता एवं विवेचन :

=) हजारी प्रसाद कुटज शब्द की व्याख्या करने के क्रम में अपने शब्दशास्त्र, पांडित्य, इतिहास ज्ञान का बोध करते हैं।

=) आत्मव्यंजक शैली तथा संवाद शैली का प्रभावपूर्ण प्रयोग।

"जानता हूँ उजाड़ के साथी तुम्हें जानता हूँ—

=) कुटज के माध्यम से जीजिविषा की अदम्य शक्ति को प्रेरणाप्रद रूप से प्रस्तुत करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

=> निबंध कला की दृष्टि से भावपरकता, आत्मीयता, सहृदयता, अनुभूतिपरता जैसे तत्व उभरते हैं। उदा-
" नाम में क्या रखा है?

=> भाषा की दृष्टि से कसी हुई संस्कृत निष्ठ भाषा, नवीन शब्दों का समावेश कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग
उदा- आस्ट्रो एशियाटिक

इस प्रकार कुटज के माध्यम से द्विवेदी जी जहाँ एक ओर अपने पांडित्य को साधा है, तो वही कुशल निबन्धकार का धर्म निभाते हुए एक प्रभावी ललित निबन्ध लिखा है।

प्रभावशाली है
गहराई लाएं
8½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित श्रद्धा-भक्ति उनका प्रमुख मनोविकार परक निबन्ध है।

प्रतिपाद्य की विशेषताएँ

=> विचारों की गूढ़ गुम्फित परम्परा के प्रभाव से युक्त निबन्ध है।

=> निगमनात्मक शैली में लिखा गया है।

=> श्रद्धा और प्रेम में अन्तर तथा प्रेम एवं भक्ति के सम्बन्धों को विश्लेषित किया गया है।

=> श्रद्धा के तीन प्रकार शील सम्बन्धिनी प्रतिभा सम्बन्धिनी एवं सम्पत्ति सम्पदा सम्बन्धिनी बताया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

=> शील ~~प्रतिभा~~ को श्रेष्ठ प्रकार की श्रद्धा बताया गया है।

=> श्रद्धा एवं प्रेम के योग से भक्ति की उत्पत्ति विवेचित की गई है।

=> श्रद्धा एवं प्रेम में अन्तर को कई आधारों पर व्यक्त किया गया है।

=> प्रेम में साहचर्य को अनिवार्य बताया गया है तथा अधिकार की प्रबल भावना दिखायी गयी है।

=> वैज्ञानिक शैली में लिखा गया विचारपरक निबन्ध है।

इस प्रकार शुक्लजी ने श्रद्धा-भक्ति में अपने विचारों की धारा प्रवाहित की है।

प्रयास अच्छा है और गहराई लाएँ

7/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'शुक्लजी गंभीर प्रकृति के मननशील व्यक्ति थे किन्तु निबंधों में स्थान-स्थान पर हास्य, व्यंग्य तथा विनोद की चुटकियाँ लेकर विषय को रंजक बनाया है।' विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शुक्लजी गंभीर एवं विचारशील प्रकृति के निबन्धकार रहे है।

निबंधों हास्य व्यंग्य के तत्व -

=> कुछ स्थानों पर बोझिलता दूर करने के लिए इनका प्रयोग किया है।

=> गलक के आठ अंगुल मुँह फैलाने का उदाहरण देकर हास्य व्यंग्य को उभारा है।

=> श्रद्धा-भक्ति तथा कविता क्या है दोनों ही निबन्धों में कई स्थानों पर अपनी व्यंग्य कला का प्रदर्शन किया है।

=> यद्यपि यह हास्य व्यंग्य बहुत कम ही मात्रा में है, ज्यादातर विचारों की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शुद्ध मुक्ति परम्परा जो कि पाठक की बुद्धि को उत्तेजित कर दे, वही दिखाई देती है।

संक्षेपतः विचारों के साथ हास-व्यंग्य का कुशल पुट अकेला गया है।

गहराई लाएँ
मॉडल उत्तर देखें

5/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation